एम॰ए॰ II सेमेस्टर
कथा साहित्य
इकाई-4 बाणभट्ट की आत्मकथा

'बाणभट्ट की आत्मकथा' (1946) हजारीप्रसाद द्विवेदी का प्रथम उपन्यास है। इस उपन्यास में भारतीय साहित्य के महान सर्जक बाणभट्ट की जीवनी को आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है। "बाणभट्ट की आत्मकथा एक ऐसा ऐतिहासिक 'रोमांस' है जिसे हर्षकालीन भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपरा का जीवंत दस्तावेज कहा जा सकता है।" 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के अतिरिक्त द्विवेदी जी के तीन और उपन्यास हैं- 'चारु-चन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', और 'अनामदास का पोथा'। इन चारों उपन्यासों में प्राचीन भारत की सांस्कृतिक आधारभूमि का आख्यान है। 1976 में प्रकाशित 'अनामदास का पोथा' औपनिषदिक काल से सम्बद्ध होने के कारण इतिहास की सीमा में नहीं आता पर बाकी तीन उपन्यास ऐतिहासिक कालक्रम की दृष्टि से गुप्तकाल के आरम्भ, हर्षवर्द्धन काल और दिल्ली सल्तनत के आरम्भिक दौर से जुड़े हुए हैं। 'गुप्त साम्राज्य के पतन और हर्षवर्द्धन के राज्यारोहण के बीच की अवधि में उत्तरी भारत हूणों के बर्बर आक्रमणों से त्रस्त रहा। यह एक महान राजनीतिक संकट था, जिसकी अभिव्यक्ति 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में हुई है।' यह 'एक ऐसा उपन्यास है जिसकी घटनाएं मुख्यतः उपन्यासकार की उर्वर कल्पना और रचनात्मक प्रतिभा की उपज होने के बावजूद उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पुनर्सृष्टि करने में सर्वथा सफल हुई है जिसमें सातवीं

शताब्दी का हर्षकालीन भारतीय समाज अपने समस्त गुण-दोषों के साथ जीवंत हो उठा है।'

'बाणभट्ट की आत्मकथा' हिन्दी में अपने प्रकार का निराला उपन्यास है। एक ऐतिहासिक व्यक्ति बाणभट्ट की जीवन-गाथा होते हुए भी इसकी मूल्यकथा काल्पनिक है। आत्मकथा होने का भ्रम उत्पन्न करने के लिए इसके 'कथामुख' में लेखक ने दीदी अर्थात मिस कैथेराइन का जिक्र किया है। आस्ट्रिया की अनुसंधान प्रिय दीदी को इस कथा की पाण्डुलिपि शोण नदी के किनारे भ्रमण करते समय मिली थी। लेकिन यह मजाक है और मजाक होकर भी अपना प्रतीकार्थ रखता है। 'उपसंहार' में लेखक ने पुनः यह आभास दिया है कि जैसे मिस कैथेराइन ने बाणभट्ट के बहाने से अपनी ही कथा लिखी है। इस संदर्भ में नलिन विलोचन शर्मा लिखते हैं- "बाणभट्ट की आत्मकथा' साहित्यिक परकाय प्रवेश का उत्कृष्ट उदाहरण है: द्विवेदी जी को बाणभट्ट बन जाने में पूरी सफलता मिली है।'

रामदरश मिश्र के अनुसार - "हजारीप्रसाद द्विवेदी मानववादी रचनाकार हैं। वे अपने समय की तमाम चिंताओं से गुजरते हुए एक ऐसे संसार की सृष्टि करते हैं जिसमें परिवर्तनशीलता, शोषित, लांछित और अभाव-ग्रस्त समाज तथा व्यक्ति की पीड़ा रेखांकित करती हुई उसकी नई जागृति की सूचना देती है, उसकी अस्मिता के महत्व की ओर ध्यान खींचती है। इस प्रकार वे इतिहास या पुराण के तथ्यों को लेकर समकालीन सत्य की रचना करते हैं और साथ ही उसके चिरंतन होने का आभास पैदा करते हैं।" अपनी आत्मकथा में बाणभट्ट अपने 'जीवन तथ्यों' या 'आंतरिक दुनिया' की कहानी नहीं कहता है, वह तो अपने समय की ओर

Scanned with CamScanner

उसके माध्यम से शोषक समाज से संघर्षरत अभिशप्त लोगों की कहानी कहता है।

'बाणभट्ट की आत्मकथा' का वस्तु विन्यास 'कादम्बरी' और 'हर्षचरित' की कथा - आख्यायिका की शैली पर आधारित है। 'आख्यायिका उच्छ्वासों के प्रकरण-विभाग में बँधी हुई ऐतिहासिक कथावस्तु पर आधारित होती है और 'कथा' की कथावस्तु का आधार काल्पनिक होता है। एक घटना प्रधान होती है दूसरी वर्णन प्रधान।' इस उपन्यास में उपर्युक्त दोनों शैलियों का मिश्रित प्रयोग किया गया है। बाणभट्ट, भट्टिनी और निपुणिका की मुख्य कथा कल्पनाप्रसूत और वर्णनात्मक है। सुचरित-विरतिवज्र तथा भट्टामाया - अघोर भैरव की प्रासंगिक कथाएं मुख्य कथा को व्यापक सांस्कृतिक धरातल प्रदान करती हैं। इन कथाओं के माध्यम से एक समूचे युग की कला, साहित्य, भाषा, समाज, धर्म- दर्शन और इतिहास की परंपरा अपने पूरे परिवेश के साथ जीवंत हो उठी है।

उपन्यास में वर्णित समय में धर्म अपनी प्रेरक शक्ति खोने लगा था और समाज में वाह्याचारों, मिथ्या विश्वासों, चमत्कारिक सिद्धियों द्वारा स्वर्ग और मोक्ष की दीक्षा देने वाले धर्माचार्यों, सन्यासियों, भिक्षु- भिक्षुणियों के ऊपर से मनुष्य का विश्वास उठता जा रहा था। उपन्यास में वर्णित जटिल वटु एवं चण्डी मंदिर के द्रविण पुजारी का प्रसंग धार्मिक पाखण्ड के भीतर के दूषित वातावरण को उजागर करते हैं।

इस उपन्यास के सभी स्त्री-पात्र चाहे वह भट्टिनी हो या निपुणिका, भट्टामाया हो या सुचरिता सभी किसी न किसी प्रकार की सामाजिक विडम्बना या

Scanned with CamScanner

शोषण का शिकार है। 'बाहर से देखने पर उनकी अमानवीय समस्याएं अलग दिखाई पड़ती हैं किन्तु भीतर से उनमें एकसूत्रता है। पतनोन्मुखी सामंती विलासिता के आवर्त में फँसी भट्टिनी से बाणभट्ट का प्रथम परिचय 'असुर-गृह में कैद लक्ष्मी' और 'अशोकवन की सीता' के रूप में होता है। भट्टिनी के उद्धार यत्न में नियोजित भट्ट के समक्ष छोटे राजकुल के अन्तःपुर में कैद कितनी ही अन्य स्त्रियों का प्रश्न भी आता है। सामंती-पुरोहिती समाज व्यवस्था की दमन-चक्की में लाखों करोड़ों की संख्या में पिस रही मानवता के प्रश्न को भुक्तभोगी महामाया व्यापक सामाजिक संदर्भ प्रदान करती प्रखर ढंग से उठाती है - "इस उत्तरापथ में लाख-लाख निरीह बहुओं और बेटियों के अपहरण और विक्रय का व्यवसाय क्या नहीं चल रहा है? क्या निरीह प्रजा की बेटियाँ उनकी नयनतारा नहीं हुआ करतीं? क्या राजा और सेना-पति की बेटियों का खो जाना ही संसार की दुर्घटनाएँ हैं।" महामाया द्वारा उठाया गया यह प्रश्न आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

बाणभट्ट का आरम्भिक जीवन एक बिगड़े हुए आवारा छोकरे के रूप में चित्रित है। लोकोपवादों से घिरा यह भट्ट कालान्तर में नारीदेह को पवित्र मंदिर मानने वाले सच्चरित नवयुवक के रूप में गरिमा प्राप्त करता है। वह नारी उद्धार से लेकर राष्ट्र रक्षा के महान दायित्वों का निर्वाह करता है। भट्ट की जीवन यात्रा में निपुणिका उसकी निकट सहयोगी है। 'आजीवन दुःख की निदारुण भट्टी में जलने वाली लांछित निपुणिका के संदर्भ में भट्ट सोचता है - "निपुणिका में इतने गुण हैं कि वह समाज और परिवार की पूजा का पात्र हो सकती थी, पर नहीं हुई।" उसका चित्त कहता है कि दोष

किसी और वस्तु में है जो इन सारे सद्गुणों को दुर्गुण कहकर व्याख्या करा देती है। अर्थात दोष दर्पण में है, चेहरे में नहीं। मनुष्य में सत्य को देखने का आत्म-विश्वास उत्पन्न करने के लिए ही अघोर भैरव भट्ट को गुरुमंत्र देते हैं कि सत्य के लिए - 'किसी से न डरना गुरु से भी नहीं, मंत्र से भी नहीं, लोक से भी नहीं, वेद से भी नहीं।' युगीन संदर्भ में यह सामाजिक जीवन से मोहभंग का सत्य है।

इस प्रकार इस उपन्यास के माध्यम से द्विवेदी जी ने ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में युग सत्य को आत्मसात करने का प्रयास किया है। मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा में सत्य और न्याय के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा आद्यान्त विद्यमान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बाणभट्ट की आत्मकथा : पाठ और पुनर्पाठ
   सम्पादक मधुरेश
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य,
   डा० चौथी राम यादव
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय

ललिता यादव
एसो० प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एन० ए० एस० कॉलेज
मेरठ

Scanned with CamScanner